بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **22.12.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

उन्होंने उस ग़रीब दर्वेश का जो वास्तव में एक महामान्य बादशाह था ऐसे जटिल समय में वफ़ादारी के साथ मुहब्बत और इश्क़ से भरे हुए दिल के साथ दामन पकड़ा जिस ज़माने में भविष्य की प्रगति की तो क्या सम्भावना, ख़ुद उस सुधारक पुरुष की कुछ दिनों के भीतर जान जाती दिखाई पड़ती थी।

यह वफ़ादारी का सम्बंध केवल ईमान की शक्ति के जोश के कारण था जिसकी मस्ती से वे अपनी जानें देने के लिए ऐसे खड़े हो गए जैसे अत्यधिक प्यासा मीठे स्रोत पर सहसा खड़ा हो जाता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मैंने सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमओन की शान, उनकी प्रतिष्ठा तथा उनके नमूने के विषय में बयान किया था। कुछ सहाबा के जीवन चरित्र बयान किए थे, और भी बयान करना चाहता था किन्तु समय की कमी के कारण बयान नहीं कर सका। बाद में लोगों के पत्रों से मुझे आभास हुआ कि जो नोट्स मैंने लिए थे, कम से कम वे बयान कर दूँ ताकि जहाँ सहाबा के विषय में जानकारी प्राप्त हो, उनके बलिदानों का ज्ञान हो, वहाँ हमें उनके नमूनों को अपनाने की ओर भी ध्यानाकर्षित हो। इस लिए आज मैं फिर उसी संदर्भ में बात करुंगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक प्रतिष्ठित सहाबी अबू उबैदा बिन अलजराह थे। एक सहाबी होने के रूप से निःसन्देह उनका एक उच्च स्तर था, अनेक प्रतिभाओं के स्वामी थे परन्तु आपके अमीन होने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो प्रमाण पत्र प्रदान किया है उसका रिवायतों में इस प्रकार वर्णन मिलता है कि नजरान के प्रतिनिधि मंडल ने जब नजरान वालों से किसी को ख़िराज (टैक्स) वसूल करने के लिए भिजवाने के लिए कहा तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे पास अवश्य ऐसा व्यक्ति भेजूँगा अर्थात, एक ऐसा अमीन जो सम्पूर्ण रूप में अमीन होगा। तो सहाबा की गर्दनें फिर, सहाबा गर्दनें उठा उठा कर देखने लगे कि कौन है वह व्यक्ति जिसको आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सम्मान दे रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू उबैदा खड़े हो जाएँ और हज़रत अबू उबैदा को वहाँ भेजने का आदेश दिया। उनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक कथन की हज़रत अनस रज़ीअल्लाहु अन्हु से इस प्रकार रिवायत मिलती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि प्रत्येक उम्मत का एक अमीन होता है और ऐ मेरी उम्मत, हमारे अमीन उबैदा बिन अलजर्राह हैं। कितना बड़ा सम्मान है जिससे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको सुशोभित किया।

उनकी विनम्रता, आपस के सहयोग तथा विवेक पूर्ण रीति से मामले तय करने की घटना इस प्रकार बयान होती है कि एक अभियान पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरू बिन अलआस को सेना का सरदार बनाकर भेजा, वहाँ जाकर पता चला कि दुश्मन की संख्या अधिक है। उनकी सेना में अधिकांश संख्या आराबियों की थी तथा प्रवासी सहाबा कम थे। इस पर हज़रत उमरू बिन अलआस ने और अधिक सैन्य सहायता मांगी तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू उबैदा

के नेतृत्व में एक टुकड़ी भिजवाई और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू उबैदा को यह नसीहत फ़रमाई कि दोनों प्रमुख परस्पर सहयोग से काम करना। किन्तु उमरू बिन आस ने इस विचार से कि यह सेना तो सहायता के लिए आई है इस लिए उनके आधीन है, अबू उबैदा के सैनिकों को सीधे ही आदेश देना आरम्भ कर दिया। इस अवसर पर बजाए किसी विवाद में पड़ने के हज़रत अबू उबैदा ने कहा कि यद्यपि मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक स्वतंत्र अमीर के रूप में भेजा है परन्तु साथ ही परस्पर सहयोग के लिए भी आदेश दिया था इस लिए मेरी ओर से आपको सहयोग ही मिलेगा चाहे आप मेरी बात मानें या न मानें, मैं प्रत्येक बात में आपकी बात मानूँगा।

अतः यह है अवसर की जटिलता के अनुसार निर्णय लेकर मुसलमानों की शक्ति को सुदृढ़ बनाने के लिए अपने अधिकार को भी छोड़ देना। यह परस्पर सहयोग है जो आज मुसलमानों की शक्ति को एक महान शक्ति बना सकता है, जिसकी आज मुसलमानों को आवश्यकता है। काश कि मुसलमान लीडरों को भी समझ आ जाए कि किस प्रकार आपस में सहयोग करें।

आज दुनिया में शांति की ज़मानत, न्याय और इंसाफ़ तथा अमानतों का हक़ अदा करने से ही हो सकती है, न कि बड़ी सरकारों का छोटी सरकारों को विवश करना कि हमारी इच्छानुसार चलो अन्यथा हम तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही करेंगे। अधिकांश मुस्लिम देशों में जनता से टैक्स वसूल करके उन पर ख़र्च के बजाए अपने ख़ज़ाने अधिकांश लीडर भर रहे हैं तथा नारा लगाते हैं हुब्बे रसूल का और सहाबा की मुहब्बत का।

फिर हज़रत अब्बास हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा थे, दान शीलता और सिला रहमी (निकट सम्बंधियों की सेवा) में विख्यात थे, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब्बास क़ुरैश में सबसे बढ़कर दानी तथा सिला रहमी करने वाले हैं। इस बात को सुनकर हज़रत अब्बास ने सत्तर बन्दी स्वतंत्र कर दिए। ये थे उन लोगों की दान शीलता के स्तर।

फिर हज़रत जाफ़र हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई थे तथा हज़रत अली के सगे भाई थे, उन्होंने भी आरम्भिक ज़माने में इस्लाम क़बूल करने का सौभाग्य प्राप्त किया और मक्का में विरोधी हालात के कारण हबशा चले गए। मक्का वालों को जब पता चला तो उन्होंने अपने दो सरदारों को बहुत से उपहार देकर हबशा भेजा तथा वहाँ के सरदारों के लिए उपहार इत्यादि भेजे इस सन्देश के साथ कि हमारे कुछ नासमझ युवा अपना दीन छोड़ कर तुम्हारे देश में आ गए हैं और तुम्हारा दीन भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया, बिल्कुल नया दीन है।

अतः नजाशी ने मक्का के काफ़िरों की बात सुनने के बाद मुसलमानों को अपने दरबार में बुलाया। मुसलमान बड़ी विकट परिस्थितयों में वहाँ गए कि पता नहीं क्या व्यवहार होता है हमारे साथ। नजाशी ने उनसे पूछा कि क्या कारण है कि तुमने अपना दीन छोड़ दिया है, न ही किसी पहली उम्मत का दीन स्वीकार किया है, न हमारा अर्थात ईसाइयत। हज़रत जाफ़र रज़ीअल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर मुसलमानों का प्रतिनिधित्व किया और कहा कि ऐ बादशाह, हम मूर्ख क़ौम थे, बुतों की पूजा करते थे, मुरदार खाते थे। कुकर्म करना और रिश्तेदारों से दुर्व्यवहार करना हमारा नियम था। हममें से शक्तिशाली दुर्बल को दबा लेता था। इन परिस्थितियों में अल्लाह तआला ने हममें एक रसूल नियुक्त फ़रमाया जिसकी सज्जनता तथा सच्चाई एवं अमानत और पवित्र जीवन तथा पारिवारिक सभ्यता से हम भली भांति परिचित थे। उसने हमें ख़ुदा तआला की तौहीद तथा बन्दगी की ओर बुलाया और शिक्षा दी कि हम किसी को ख़ुदा का साझी न मानें तथा न ही बुतों की पूजा करें। उसने हमें सच्चाई तथा अमानत, सिला रहमी (निकट सम्बंधियों की सेवा) पड़ौसियों से सुन्दर व्यवहार तथा अकारण ही झगड़ों और रक्तपात से मना किया, अशलीलता से बचने का उपदेश दिया, झूठ बोलने तथा अनाथ का माल खाने और पवित्र आचरण की महिलाओं पर आक्षेप लगाने से मना किया। हमें आदेश दिया कि हम केवल एक ख़ुदा की बन्दगी करें, हमने उसे क़बूल किया तथा उसके आदेशानुसार काम करते हैं। इस बात के कारण हमारी क़ौम हमारे विरुद्ध हो गई तथा हमें यातनाएँ दीं, कठिनाईयों में डाला और जब इस अत्याचार की चरम सीमा हो गई तो हम अपना देश छोड़कर आपकी शरण में आ गए क्यूँकि आपके न्याय और इंसाफ़ की चर्चा सुनी थी। ऐ बादशाह, हम आशा करते हैं कि इस देश में हम पर कोई अत्याचार नहीं होगा। नजाशी इस बात से बड़ा प्रभावित हुआ और कहा कि तुम्हारे रसूल पर जो कलाम उतरा है उसमें से मुझे भी कुछ पढ़कर सुनाओ। इस पर उन्होंने सूरः मरयम की कुछ आयतें पढ़ीं तथा इतनी

सुन्दर वाणी के साथ पढ़ीं कि नजाशी रोने लगा और कहा कि ख़ुदा की क़सम लगता है यह कलाम और मूसा का कलाम एक ही स्रोत से अवतरित हुए हैं और मक्का के दूतों से कहा कि तुम्हें ये लोग वापस नहीं करुंगा, ये अब यहीं रहेंगे। उन मक्का के दूतों ने विचार विमर्श के बाद यह युक्ति अपनाई कि बादशाह को कहा कि ये लोग ईसा को ईसाईयों की आस्था के अनुसार नहीं मानते तथा उसका स्तर कम करते हैं। बादशाह ने फिर मुसलमानों को बुलाया और हज़रत ईसा के बारे में अक़ीदा पूछा। इस पर हज़रत जाफ़र ने कहा कि इस बारे में हमारे नबी पर यह कलाम अवतरित हुआ है कि ईसा अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल है जो अल्लाह तआला ने कंवारी मरयम को प्रदान किया। नजाशी ने ज़मीन से एक तिनका उठा कर कहा कि हज़रत ईसा का स्तर इस तिनके के बराबर भी अधिक नहीं जो तुमने बयान किया है और मुसलमानों को कहा कि यहाँ तुम्हें पूर्ण स्वतंत्रता है। आपके विवेक, दूर दर्शिता तथा ज्ञान ने मुसलमानों के वहाँ रहने की व्यवस्था उत्पन्न करा दी।

एक सहाबी मसअब बिन उमैर थे, उनकी वालिदा बड़ी धनवान थीं, बड़ी धनी लोग थे, बड़े लाड प्यार में पले बढ़े थे, बड़ा उत्तम लिबास पहना करते थे, बड़े सुन्दर जवान थे। एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मसअब को इस हालत में देखा कि मजलिस में आए तो कपड़ों में चमड़े के पेवन्द लगे हुए थे। सहाबा ने उनकी यह दशा देखकर सिर झुका लिया। जब मजलिस में आकर हज़रत मसअब ने सलाम किया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिल के स्नेह के साथ सलाम का उत्तर दिया तथा उस धनी व्यक्ति की पहली दशा और वर्तमान दशा को देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में आँसू आ गए। फिर उन्हें सांत्वना देते हुए फ़रमाया कि अलहमदु लिल्लाह दुनिया वालों को उनकी दुनिया मुबारक, मैंने मसअब को उस ज़माने में भी देखा है जब मक्का नगर में उनसे बढ़कर कोई समृद्ध व्यक्ति नहीं था, ये माता पिता के सर्व प्रिय संतान थे तथा उन्हें खाने पीने की प्रत्येक उत्तम वस्तु उपलब्ध थी परन्तु ख़ुदा के रसूल से प्रेम ने उसे इस दशा को पहुंचाया है और उसने वह सब कुछ ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के कारण छोड़ दिया। फिर ख़ुदा ने उसके चेहरे को नूर प्रदान कर दिया। हज़रत मसअब को तबलीग़ करने का भी गहन अनुभव था, बड़े प्यार से तबलीग़ करते थे और कहा करते थे तबलीग़ करने वालों को कि यदि मेरी बातें अच्छी लगें तो सुनो, न पसन्द आएँ तो न सुनो उठकर चले जाओ और इस प्रकार मदीने के नए लोगों तक सत्य का सन्देश पहुंचाया। बहुत से लोग इनकी तबलीग़ के कारण मुसलमान हुए।

हज़रत उसैद बिन हज़ीर अन्सारी को हज़रत मसअब के माध्यम से इस्लाम क़बूल करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके आध्यात्मिक स्तर के विषय में रिवायत है कि वे कहा करते थे कि मेरी तीन अवस्थाएँ ऐसी हैं कि उनमें से कोई एक अवस्था भी मुझपर छाई रहे तो अपने आपको जन्नत के वासियों में से समझूंगा। पहली बात यह है जब मैं क़ुर्आन-ए-करीम की तिलावत करता हूँ तथा कोई और तिलावत करे और मैं सुन रहा हूँ तो उस समय मुझ पर जो ख़ुदा के भय की अवस्था आती है यदि वह सदैव रहे तो मैं अपने आपको जन्नत वालों में समझूंगा। दूसरी बात यह है जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुत्बः इरशाद फ़रमाते हैं तथा मैं बड़े ध्यान पूर्वक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपदेश सुनता हूँ तो उस समय मेरी जो स्थिति होती है यदि वह स्थाई हो जाए तो मैं जन्नत वालों में से हो जाऊँ। तीसरे, कहते हैं जब मैं किसी जनाज़े में शामिल हूँ तो मेरी यह दशा होती है मानो यह मेरा जनाज़ा है तथा मुझसे पूछ ताछ चल रही है, यदि यह अवस्था निरन्तर रहे तो मैं जन्नतियों में अपने आपको समझूँगा।

अतः यह उनकी उच्च स्तरीय ख़ुदा के भय की निशानी है तथा यही निशानी है जो इंसानों को अल्लाह तआला का भय याद दिलाती रहती है और फिर इंसान नेक काम का प्रयास भी करता रहता है तथा हर समय अल्लाह तआला याद रहता है। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि हर समय उनकी यह अवस्था होना कि यह हो तो अपने आपको जन्नत वाला समझूँ, इस बात से ही ज्ञात होता है कि वे निःसन्देह जन्नतियों में से थे तथा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले थे।

फिर एक अन्सारी सहाबी उबयी इब्ने कअब थे, आप भी कर्मठ ज्ञानी थे बड़ी यथावत रूप से पाँचों नमाज़ें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अदा किया करते थे। नमाज़ों की पाबन्दी के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक कथन बतलाते हैं कि फ़ज्र की नमाज़ के पश्चात आपने कुछ लोगों के बारे में पूछा कि वे नमाज़ के लिए नहीं आए? फिर आपने फ़रमाया कि दो नमाज़ें फ़ज्र और इशा, दुर्बल ईमान वालों तथा मुनाफ़िकों (द्विमुखी) पर बड़ी भारी हैं। यदि उनको पता हो

कि इन नमाज़ों का कितना सवाब है तो वे अवश्य ही इन नमाज़ों में शामिल हों, चाहे उन्हें घुटनों के बल ही आना पड़े।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास वह क्या बात थी कि जिसके होने से सहाबा ने इतनी सत्यता दिखलाई तथा उन्होंने न केवल बुतों को पूजने तथा सृष्टि की उपासना से मुंह मोड़ा अपितु वास्तव में उनके भीतर से सांसारिकता ही गुम हो गई और वे ख़ुदा को देखने लग गए। वे बड़ी एकाग्रता से ख़ुदा तआला के मार्ग में ऐसे बलिदानी थे कि मानो उनमें से प्रत्येक इब्राहीम था। उन्होंने सम्पूर्ण निष्ठा से ख़ुदा तआला के प्रताप व्यक्त करने के लिए वे काम किए जिनका उदाहरण इसके पश्चात कभी पैदा नहीं हुआ तथा प्रसन्नता के साथ दीन के मार्ग में मिट जाना क़बूल किया बल्कि कुछ सहाबा ने जो सहसा शहादत न पाई तो उनके मन में आया कि सम्भवतः हमारी निष्ठा में कोई कमी है जैसा कि इस आयत में संकेत है فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ अर्थात- कुछ तो शहीद हो चुके और कुछ अभी प्रतीक्षा में हैं कि कब शहादत का सौभाग्य प्राप्त हो। आप फ़रमाते हैं कि अब देखना चाहिए कि क्या उन लोगों को दूसरे लोगों की भांति आवश्यकताएँ न थीं तथा संतान से प्रेम और अन्य सम्बंध नहीं थे परन्तु उस आकर्षण ने उनको ऐसा मस्ताना बना दिया था कि दीन को प्रत्येक वस्तु पर प्रमुखता दी हुई थी।

फिर आप फ़रमाते हैं कि सांसारिक जीवन की दृष्टि से उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास क्या रखा था जिसके लोभ के कारण वे अपने जीवन तथा सम्मान बलिदान करते और अपनी क़ौम से पुराने तथा लाभप्रद सम्बंधों को तोड़ लेते। उस समय तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तंगी और कठिनाई तथा निर्धनता का ज़माना था तथा भविष्य की आशा बांधने के लिए किसी प्रकार के निशान एवं संकेत विद्यमान न थे। इस प्रकार उन्होंने उस निर्धन दर्वेश का जो वास्तव में एक महामान्य बादशाह था ऐसे विकट समय में श्रद्धा के साथ मुहब्बत और इश्क़ से भरे हुए दिल के साथ दामन पकड़ा जिस ज़माने में भविष्य की उन्नति की तो क्या आशा, ख़ुद उसी सुधारक पुरुष की कुछ दिनों में जान जाती दिखाई देती थी। यह निष्ठा का सम्बंध केवल ईमान की शक्ति के जोश के कारण था जिसकी मस्ती में वे अपनी जानें देने के लिए ऐसे खड़े हो गए जैसे अत्यंत प्यास के समय प्यासा मीठे स्रोत पर सहसा खड़ा हो जाता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ों के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा जो मुकर्रमा उरीशा डैफ़न थोलर साहिबा पत्नि फ़हीम डैफ़न थोलर साहब हॉलैन्ड का है जो आजकल बैनिन में थीं। 11 दिसम्बर को बैनिन में ही अचानक हार्ट फ़ेल होने के कारण 62 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इन्होंने 18 मार्च 2008 को बैअत की थी, इनको ख़िलाफ़त के साथ बड़ा प्रेम था। 2009 में मरहूमा अपने पति मुकर्रम फ़हीम साहब के साथ अपना जीवन अर्पित करके ह्यूमिनिटी फ़र्स्ट के अंतर्गत बनने यतीम ख़ाने (अनाथालय) का प्रबन्धन संभालने के लिए बैनिन अफ़रीक़ा, पश्चिमी अफ़्रीक़ा चली गईं। मरहूमा यूरपी समाज में पली बढ़ी थीं तथा बड़ी अच्छी नौकरी भी थी, इसके बावजूद अफ़्रीक़ा में उन्होंने बड़ी कठिन परिस्थितयों में, बड़े सुन्दर रंग में अपना वक़्फ़ निभाया तथा बड़ी ज़िम्मेदारी से अपने दायित्वों का निर्वाह किया। नमाज़ों की पाबन्द थीं, अहमदिया दारुल इकराम यतीम ख़ाने में बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से काम करती थीं। नवजात शिशुओं को उठाए फिरतीं, उनका बड़ा ध्यान रखतीं। उनके निधन के साथ, मैं समझता हूँ कि दारुल इकराम के बच्चे अब अनाथ हो गए हैं। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए और उनसे दया और क्षमा का व्यवहार फ़रमाए तथा ऐसे निष्ठावान तथा समर्पण की आत्मा को समझने वाले और अधिक अल्लाह तआला जमाअत को प्रदान करता रहे।

TOLL FREE NO: 180030102131